दशम अणुव्रत नैतिक गीत गायन प्रतियोगिता का भव्य कार्यक्रम स पन्न

लाडनूं - नव बर।

अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास द्वारा आयोजित अणुव्रत नैतिक गीत गायन प्रतियोगिता के समापन सत्र में कार्यक्रम व पुरस्कार वितरण समारोह को संबोधित करते हुए आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने कहा कि जैसे म€खन को निकालने के लिए दूध को कभी गर्म किया जाता है कभी ठण्डा किया जाता है उसी तरह हमारा प्रयत्न म€खन के लिए होना चाहिए। अणुव्रत को शिक्षा जगत में सरसता के साथ कैसे प्रवेश कराया जाये इस पर चिंतन होना चाहिए। न्यास द्वारा आयोजित इस संगीत के कार्यक्रम से अणुव्रत विद्यार्थियों में पहुंचाया जा सकता है। €योंकि संगीत में सरसता होती है। जिससे नैतिकता की बात विद्यार्थियों के गले में सीधी उǍार जाती है। उन्होंने विद्यार्थियों को अणुव्रत के गीतों में छिपे संदेश को जीवन में उतारने की प्रेरणा दी।

उन्होंने न्यास के कार्यक्रम की सरहाना करते हुए कि अणुव्रत विद्यार्थियों के निर्माण का सुंदर उपक्रम है। हमें इसके सभी पक्षों पर काम करना है जिससे आज के अनैतिक युग में नैतिकता के द्वारा सभी समस्याओं का समाधान हो सके। उन्होंने कहा कि अणुव्रत जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान के व्यापक कार्य चारों तरफ चल रहे हैं। जिस तरह दूध, चीनी और चावल तीनों का स्वाद अलग होता है और जब तीनों को मिला दिया जाता है तो एक स्वाद हो जाता है उसी तरह अणुव्रत, जीवन विज्ञान और प्रेक्षाध्यान तीनों अलग-अलग नहीं है एक ही है।

उन्होंने कहा कि चाहे गीत संगीत के माध्यम से हो या अन्य किसी माध्यम से हो समाज और व्यक्ति को अच्छा बनाने की दिशा में कार्य करना है और व्यक्ति समाज में नैतिक चेतना का विकास एवं आध्यात्मिक चेतना का जागरण करना है इसके लिए सभी लोग परस्पर चिंतन करें जिससे एक निष्पǏि सामने आ सकती है।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि पिछले दो-तीन दिनों से गीतों की स्वरलहरियां गुंजायमान हो रही थी उसमें तैयारी और श्रम बोल रहा था। गीत गाना बड़ी बात नहीं है उससे बड़ी बात है कि अणुव्रत के गीतों की प्रेरणा मनुष्य के भीतर तक चली जाए। एक तरफ निष्पǏि और दूसरी तरफ संसाधन शक्ति दोनों का बैंलेंस बराबर रहे और यदि दोनों में से एक पलड़ा भारी है तो चिंतनीय बात हो सकती है। आवश्यक है तोलकर निष्कर्ष निकालकर भविष्य का चिंतन करना चाहिए।

इस अवसर पर अणुव्रत गीत गायन प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को जैन विश्व भारती के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र चौरड़िया, अणुव्रत न्यास के प्रबन्ध न्यासी श्री धनराज बोथरा, कार्यक्रम के राष्ट्रीय संयोजक विजयवर्धन डागा, न्यासी शांतिलाल जैन ने पुरस्कार प्रदान किये।

न्यास की ओर से कनिष्ठ एकल गायन में प्रथम रही वैंकटेश्वर पǐलक स्कूल दिल्ली की छात्रा सुनंदिता पण्डित को ख्क हजार का चैक एवं ट्रॉफी, द्वितीय स्थान प्राप्त गुरु तेग बहादूर स्कूल हल्दानी उǍारप्रदेश की छात्रा को क्क हजार का चैक एवं ट्रॉफी वरिष्ठ में प्रथम रही कोटा की छात्रा हिमांशी जोशी को एवं द्वितीय स्थान पर डी.एल.एफ साहिबाबाद की छात्रा को पुरस्कार राशि एवं ट्रॉफी देकर स मानित किया। कनिष्ठ समूह गायन में

अहल्कान पब्लिक स्कूल दिल्ली द्वितीय सरपदकपद सिंघानिया स्कूल कोटा एवं वरिष्ठ समूह गायन में प्रथम इंडियन पब्लिक स्कूल छत्तीसगढ़ द्वितीय नसी स्प्रिगडलन स्कूल कोटा को पुरस्कार प्रदान किया। सूरत के एक विद्यालय की विकलांग छात्रों को हमारा प्यारा हिन्दुस्तान गीत की सुन्दर प्रस्तुति पर विशेष प्रतिभा पुरस्कार से नवाजा गया। उनको इस पुरस्कार स्वरूप क्क हजार का चेक एवं मोमेंटो प्रदान किया गया। विकलांग द्वारा प्रस्तुत गीत 'हमारा प्यारा हिन्दुस्तान' साध्वी कनकश्री द्वारा रचित है। इस अणुव्रत गीत को दिल्ली की मु यमंत्री शीला दीक्षित ने ख्क में होने वाले राष्ट्रमंडल खेलों में गुंजायमान कराने की घोषणा की। इस मौके पर मु यमंत्री द्वारा प्रदž। शुभाशंषा संदेश का वाचन किया गया एवं प्रबंध न्यासी धनराज बोथरा ने आचार्यवर को भेंट किया।

कार्यक्रम में अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलालजी ने अणुव्रत को सर्वमान्य बैनर बताया। प्रबंध न्यासी श्री धनराज बोथरा, न्यासी श्री शांतिजैन ने न्यास की गतिविधियों पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम को सफल बनाने में श्री विजयवर्धन डागा, श्री संपतमल नाहटा, श्री गोविन्द बाफना, श्रीमती सायर बोथरा, श्री विमल गुनेचा आदि का श्रम नियोजित हुआ। संचालन श्री प्रमोद घोड़ावत ने किया।

कृषिमंत्री बुरड़क ने किये आचार्यश्री के दर्शन

लाडनूं - नव बर।

राजस्थान के कृषिमंत्री हरजीराम बुरड़क ने राष्ट्रसंत आचार्यश्री महाप्रज्ञ के दर्शन कर आशीर्वाद लिया। करीब ब मिनट तक आचार्यवर की उपासना में बिताने वाले बुरड़क ने कहा कि राजनीति मेरा विषय नहीं रहा। किन्हीं कारणों से जबरदस्ती मुझे ढकेल दिया। उन्होंने कहा कि मेरा परिवार बहुत धार्मिक है, धर्म के संस्कार बचपन से ही मुझे मिले हैं। कृषिमंत्री बुरड़क ने जैन विश्व भारती एवं लाडनूं के विकास पर ध्यान देने का संकल्प व्य€त किया एवं राष्ट्र की विभिन्न समस्याओं के समाधान हेतु मार्गदर्शन प्राप्त किये।

आचार्यवर ने राजनीति में अच्छे लोगों का जमे रहना जरूरी बताया। उन्होंने कहा कि जब अच्छे लोग नहीं रहेंगे तो भ्रष्टाचार को रोक पाना कठिन हो जायेगा।

जीवन विज्ञान में अनुसंधान की जरूरत : आचार्य महाप्रज्ञ

जीवन विज्ञान रिसर्च एवं ट्रेनिंग सेंटर शिलान्यस समारोह

लाडनूं - अ टूबर।

जैन विश्व भारती परिसर में अमृतवाणी के पीछे की जगह पर जीवन विज्ञान रिसर्च एवं ट्रेनिंग सेंटर शिलान्यास समारोह में बोलते हुए आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि जीवन विज्ञान एक ऐसी पद्धति है जिसमें अहिंसा की शिक्षा, नैतिकता की शिक्षा एवं आन्तरिक परिवर्तन की शिक्षा के तत्व समाहित हैं। सिद्धांतों के साथ-साथ इस शिक्षा पद्धति में प्रयोगोंु पर बल दिया गया है। जीवन विज्ञान के माध्यम से प्रशिक्षण का क्रम नियमित चल रहा है। प्रशिक्षण से लोगों को आश्चर्यजनक लाभ भी हो रहे हैं। लाभ यों हो रहा है, कैसे हो रहा है और या करने से और अधिक लाभ हो सकता है, इसका वैज्ञानिक अनुसंधान जरूरी है। इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए जीवन विज्ञान रिसर्च एवं ट्रेनिंग सेंटर की कल्पना हुई। इस कल्पना को साकार करने वाले लोग साधुवाद के पात्र हैं।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि जीवन विज्ञान स यक् जीवन जीने की कला सिखाता है। आज के युग की आवश्यकता है कि कैसे अच्छा जीवन जीया जाये। यह कला जीवन विज्ञान से संभव है। आगे उन्होंने कहा कि जीवन विज्ञान से सर्वांगीण विकास संभव है।

प्रेक्षा प्राध्यापक मुनि किशनलाल ने इस अवसर पर कहा कि जीवन विज्ञान के अन्तर्गत कुछ ऐसे विशिष्ट प्रयोग हैं जिनके माध्यम से व्यक्ति के भावों का रूपान्तरण हो सकता है। जो कभी रहस्य थे वे जीवन विज्ञान के प्रयोगों से उद्घाटित हो रहे हैं, अत: रहस्यों पर शोध जरूरी है। जीवन विज्ञान भविष्य का प्लान है जो मनुष्य के व्यवहारिक जीवन के लिए जरूरी है। जीवन विज्ञान के प्रयोग के द्वारा व्यक्ति मानसिक तनाव को दूर कर सकता है।

सुधर्मा सभा में आयोजित कार्यक्रम में जैन विश्व भारती के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र चौरड़िया ने अनुदानदाताओं के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए कहा कि जीवन विज्ञान आचार्यप्रवर का महžवपूर्ण आयाम है, जिसके द्वारा शिक्षा जगत में क्रांति आएगी जीवन विज्ञान भवन का शिलान्यास हुआ है इस भवन का उपयोग शोध और प्रशिक्षण के लिए होगा।

समारोह का प्रार भ रूस से पधारे अन्तर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान शिविर में भाग लेने वाले संभागियों द्वारा हिन्दी में प्रस्तुत आत्म साक्षात्कार गीत के मंगल संगान के साथ हुआ। इस अवसर पर दूर-दूर से पधारे अणुव्रत नैतिक गीत गायन प्रतियोगिता के छात्रों ने गीत की प्रस्तुति दी। समारोह के मु य अतिथिद्वय देवराज नाहर एवं मूलचन्द नाहर का साफा पहनाकर स मान क्रमश: जैन विश्व भारती के अध्यक्ष सुरेन्द्र चौरड़िया, मंत्री भीखमचन्द पुगलिया ने किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी ने किया।